सितम्बर, 2015 ■ मूल्य : 30 रुपए

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

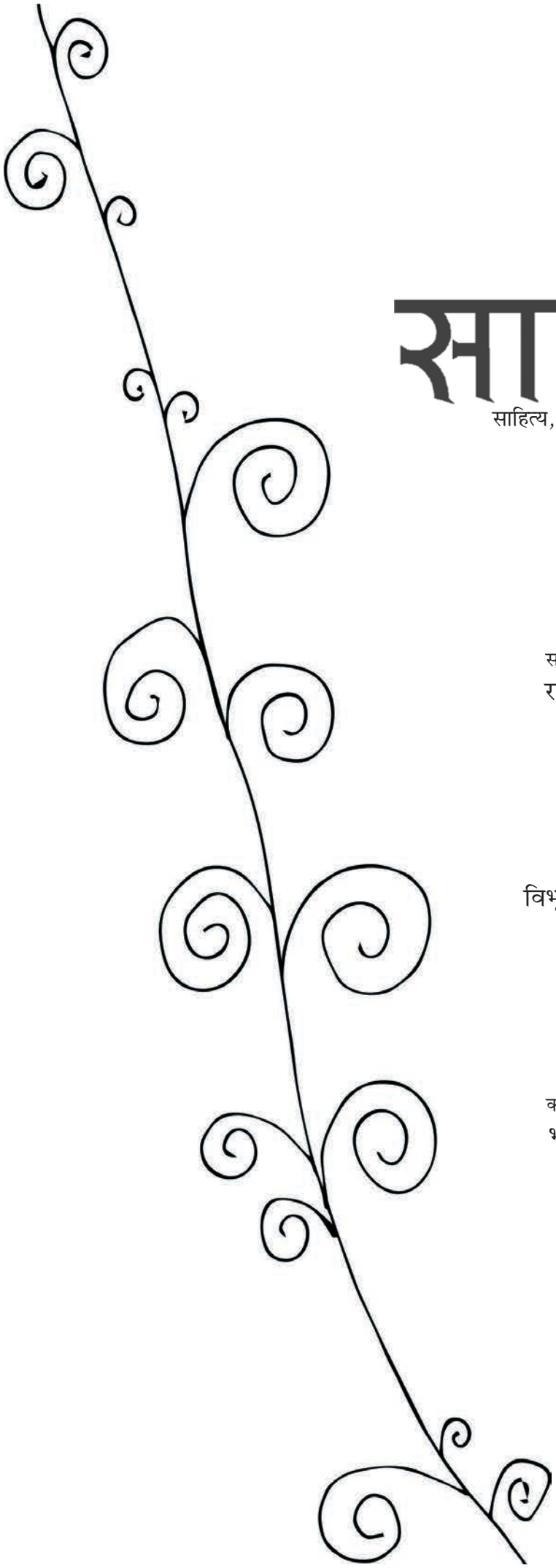

वर्तमान साहित्य

साहित्य, कला और सोच की पत्रिका

वर्ष 32 ❑ अंक 9 ❑ सितम्बर, 2015

सलाहकार संपादक
रवीन्द्र कालिया

संपादक
विभूति नारायण राय

कार्यकारी संपादक
भारत भारद्वाज

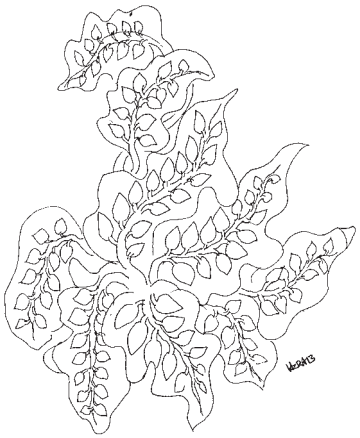

वर्ष 32 ❑ अंक 9 ❑ सितम्बर, 2015
RNI पंजीकरण संख्या 40342/83
डाक पंजीयन संख्या ए.एल.जी./63, 2013-2015

संपादकीय कार्यालय :
टी/101, आम्रपाली सिलिकॉन सिटी, सेक्टर-76,
नोएडा-201306 मो. 09643890121

àßmail : vartmansahitya.patrika@gmail.com
Website : vartmansahitya.com

आवरण एवं भीतरी रेखांकन : ऋत्विक भारद्वाज (उम्र : 7 वर्ष)

सहयोग राशि : एक प्रति मूल्य : 30/-; ☐ वार्षिक : 350/-;
☐ संस्थाओं व लाइब्रेरियों के लिए 500/- ☐ आजीवन : 11000/-
☐ **विदेशों में वार्षिक** : 70 डॉलर।

बैंक के माध्यम से सदस्यता शुल्क भेजने के लिए
वर्तमान साहित्य
चालू खाता संख्या : 85141010001260
IFSC : SYNB0008514,
सिंडीकेट बैंक, रामघाट रोड, अलीगढ़-202002

कृपया राशि भेजने की सूचना तत्काल ईमेल, एसएमएस अथवा पत्र द्वारा भेजें।

सदस्यता से सम्बन्धित सारे भुगतान मनीऑर्डर/ड्राफ़्ट/चैक/बैंक के माध्यम से **वर्तमान साहित्य** के नाम से संपादकीय कार्यालय के पते पर ही भेजे जाएँ। मनीऑर्डर भेजने के साथ ही पत्र द्वारा अपना पूरा पता फोन नं. सहित सूचित करें।

प्रकाशक, मुद्रक, संपादक विभूति नारायण राय की ओर से, रुचिका प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 (9212796256) द्वारा मुद्रित तथा 28, एम.आई.जी., अवन्तिका-I, रामघाट रोड, अलीगढ़-202001 से प्रकाशित।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से **वर्तमान साहित्य**, संपादक मंडल या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादन एवं संचालन पूर्णतया अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अंदर की बात

संपादकीय
कबिरा हम सबकी कहैं / *भारत भारद्वाज* 3

आलेख
ग़दर के मृत्युंजय महानायक : सरदार पृथ्वी सिंह / *प्रदीप सक्सेना* 5
आधी सदी अँधेरे में... / *डॉ. चन्द्रकुमार जैन* 17

स्मृति
'ओस की बूँद' का घ्झर / *राजेन्द्र वर्मा* 22

धारावाहिक उपन्यास-4
कल्चर वल्चर / *ममता कालिया* 26

चर्चित कहानी बनाम प्रिय कहानी
जख़्म / *असग़र वजाहत* 33
आत्मवक्तव्य : लेखक सौ प्रतिशत केवल पाठक के साथ होता है / असग़र वजाहत 34
चर्चा : प्रचलित आचरण के विरुद्ध / *शंभुनाथ मिश्र* 40

कविताएँ
शिरीष कुमार मौर्य 43

पुनर्पाठ
युद्ध / *शानी* 47

समीक्षा
'काला जल' शानी का कृति-स्तंभ और समाधि-लेख / *भारत भारद्वाज* 52

कहानी
साढ़े साती / *कृष्ण बिहारी* 55
होलसेल हब / *प्रमोद राय* 58
आब-दाना / *दीपक शर्मा* 65

मीडिया
नये मीडिया की नई चुनौतियां / *प्रांजल धर* 69

स्तम्भ
रचना संसार / *सूरज प्रकाश* 74
तेरी मेरी सबकी बात / *नमिता सिंह* 76

सम्मति : इधर-उधर से प्राप्त प्रतिक्रियाएं 79

संपादकीय

'लोकतंत्र का अंतिम क्षण है, कहकर आप हँसे'

यह शीर्षक हिंदी के प्रसिद्ध कवि रघुवीर सहाय की कविता 'आपकी हँसी' के बीच से उठाई पंक्ति है, जो उनके कविता-संग्रह 'हँसो हँसो जल्दी हँसो' में संकलित है, जिसका प्रकाशन साठोत्तरी दशक में संभवत: 1965/1966 में हुआ। इस कविता पर टिप्पणी बाद में।

बात कहीं से भी उठाई जा सकती है, लेकिन सहसा कहीं खत्म नहीं की जा सकती। पटना कॉलेज के विद्यार्थी के दिनों में मैंने प्रख्यात पत्रकार दुर्गादास की एक पुस्तक-'इंडिया फ्रॉम कर्जन टू नेहरू' पढ़ी थी। अब उस पुस्तक के बारे में मुझे बहुत याद नहीं है। लेकिन इतना भर याद है कि लार्ड कर्जन (1899-1905) औपनिशिक भारत के कर्ताधर्ता थे। अपने कार्यकाल में उन्होंने कई काम किए-1904 में भारतीय विश्वविद्यालय एक्ट पास किया, जिसमें विश्वविद्यालयों में विभागीय नियंत्रण को बढ़ाया गया। बंगाल विभाजन की सीमारेखा खींची गई। पुलिस कमीशन की स्थापना की गई। और भी बातों के साथ, उन्होंने रेलवे को भी विस्तार दिया। देखिए, कर्जन ने बहुत कुछ किया। उनके बाद लार्ड मंटो और जैकसन ने भी।

हमारा संविधान किस तरह बना और कैसे बना। इसको लेकर मेरे भीतर लगातार उधेड़बुन है। मैं स्पष्ट कर दूं कि एक शाम सड़क के किनारे मुझे मिली थी संविधान की अनमोल प्रति। 1950 में संविधान लागू करने के बाद इसकी गोल्डेन जुबली पर भारत सरकार ने संविधान की मूलप्रति की फोटोप्रति जारी की थी। भारत के संविधान को कैलोग्राफ्रिस्ट ने लिखा था। पूरी प्रति में कहीं काट-छाँट नहीं है। इस संविधान की साज-सज्जा बनाई थी शांति निकेतन के प्रमुख चित्रकार नंदलाल बोस ने।

यदि भारतीय संविधान को लेकर मेरे मन में उधेड़बुन है तो इसका कारण है। संविधान निर्माताओं ने तब तक उपलब्ध दुनिया के तमाम देशों के संविधान देखे थे और संविधान का निर्माण करते हुए हर बात पर गौर किया था। खासकर मौलिक अधिकार पर। संविधान को लेकर हमारे बीच कई गलतफहमियां हैं। डा. राजेन्द्र प्रसाद, जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति हुए, कांसिट्यूंट एसम्बेली के प्रधान थे और डा. बी. आर. अम्बेदकर इसके ड्राङ्घफ्टग कमिटी के चेयरमैन। 1942 के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' (Quit India Movement) के बाद ब्रिटिश सरकार हिल गई थी और उसने भारत को स्वतंत्र करने का निर्णय ले लिया था। यह अचानक नहीं हुआ था कि भारत ने स्वतंत्रता पूर्व अपने देश का संविधान बनाने का निर्णय लिया था। कांसिट्यूंट एसेम्बली की पहली बैठक नई दिल्ली में 9 दिसम्बर, 1946 को संसद भवन के कांसिट्यूशन हॉल में हुई, जिसे आज हम संसद भवन के सेंट्रल हॉल के रूप में जानते हैं। हॉल न केवल दीप प्रज्वलित था बल्कि खूब तामझाम भी था। प्रेसिडेंसियल डायस के सामने अग्रिम पंक्ति में बैठे थे-पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, आचार्य जे. बी. कृपलानी, डा. राजेन्द्र प्रसाद, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्री हरे कृष्ण

मेहताब, पं. गोविन्द वल्लभ पंत, डा. बी. आर. अम्बेडकर, श्री शरतचंद्र बोस, श्री सी. राजगोपालचारी एवं श्री आसफ अली। साथ-साथ बैठे थे कांस्टिट्यूंट एसेम्बेली के 207 प्रतिनिधि। आप या हम उस समय की कल्पना करके सिहर जाएँगे आज। इस उद्घाटन सत्र का आरंभ हुआ दिन के 11 बजे डा. सच्चिदानंद सिन्हा (बिहार), जो एसेम्बली के तत्कालीन अस्थायी अध्यक्ष थे, के आचार्य कृपलानी के उल्लेख से। डा. सिन्हा ने भारी प्रशंसा के बीच चेयरमैन का पद संभाल ही नहीं लिया बल्कि विश्व के अनेक देशों से प्राप्त सौहार्द सन्देश को भी पढ़ा।

मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता। कांस्टिट्यूंट एसेम्बली का कार्यकाल 3 साल, वस्तुत: 2 साल, 11 महीने और 17 दिन का रहा। इस बीच इसने भारतीय संविधान की रूपरेखा तैयार की। वस्तुत: 11 सत्रों में और 165 दिनों में हमारे संविधान की रूपरेखा तैयार की गई। इसमें 119 दिन हमने लगाए संविधान की रूपरेखा तैयार करने में। इस तरह भारत का संविधान बना, जिसे हमने लागू किया 26 जनवरी, 1950 को। अब हम स्वतंत्र संप्रभु भारत लोकतंत्र के नागरिक हैं।

अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने, जो बड़े डेमोक्रेट थे और अमरीका के नस्लवाद के खिलाफ निरंतर युद्ध लड़ रहे थे, की हत्या गृहयुद्ध (1861) के बीच हुई। मुझे अच्छी तरह याद है, अपने बचपन की। शायद यह बात 1954-55 की होगी। तब मैं पांचवें-छठे का विद्यार्थी रहा हूंगा। मेरे घर पर अमरीकी दूतावास से एक बड़ा कैलेंडर आया था। अब्राहम लिंकन की तस्वीर के नीचे लिखा था-

'As I would not be a slave
so I would not be master'.

उनकी यह बात अब भी मेरे सामने है। अब्राहम लिंकन मेरे आदर्श पुरुष हैं। और मेरी दृष्टि में बेहद पूजनीय और आदरणीय भी।

अब रघुवीर सहाय की कविता। इसका एक बड़ा संदर्भ है। नागार्जुन की तरह रघुवीर सहाय ने भी कुछ राजनीतिक कविताएँ लिखी हैं। अनुमानत: उनकी यह कविता 1965-66 के दौरान लिखी गई। आप याद करें, 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण हुआ। इस अप्रत्याशित दुर्घटना से हम आहत हुए। इसकी कई दुखद परिणतियां हुईं। 1964 में प्रधानमंत्री नेहरू की मृत्यु। उसी वर्ष भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन। 1967 के चुनाव में कांग्रेस की पराजय और भारत के अनेक राज्यों में संविद सरकार। 1967 में नक्सलबाड़ी आंदोलन। कहना चाहिए साठोत्तरी दशक राजनीतिक और साहित्यिक हलके में भारी उथलपुथल का काल रहा है। रघुवीर सहाय की इस कविता में लोकतंत्र के भविष्य की एक परिकल्पना है। 25 जून, 1975 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की। लेकिन हमारे लोकतंत्र की जड़ें गहरी हैं। फिर हमने लोकतंत्र को बहाल किया।

अंत में बस मैं यह कहना चाहता हूं कि मैं उस जगह से आता हूं, जहां विश्व का पहला गणतंत्र था-लिच्छवी गणतंत्र, जिसकी राजधानी वैशाली थी। इसलिए भी मेरे भीतर उस गणतंत्र की कुछ बची-खुची निशानी है।

भारत भारद्वाज

ग़दर के मृत्युंजय महानायक : सरदार पृथ्वी सिंह

□ प्रदीप सक्सेना

पिछले पृष्ठों में हमने रामविलास शर्मा के इतिहास-राजनीतिक अध्ययन की चर्चा करते हुए, उनके प्रतिनिधि ग्रंथ–'भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद' में अध्याय-2 का उल्लेख किया है जो उन्होंने 'ग़दर की परंपरा' पर लिखा है।[1] प्रथम खण्ड की भूमिका में उन्होंने दो बातें स्पष्ट लिखी हैं :

1. ''1857 की लड़ाई भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम हो चाहे सामंती हितों की रक्षा के लिए चलाया जानेवाला प्रतिक्रियावादी संघर्ष हो, एक बात निर्विवाद है कि सावरकर और लाला हरदयाल से लेकर चन्द्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह तक भारत में जिन लोगों ने सशस्त्र क्रांति का प्रयास किया, प्राय: उन सबने ग़दर से प्रेरणा ली। जिन्होंने अपनी पार्टी का नाम ही 'ग़दर पार्टी' रखा, उन्होंने डंके की चोट पर ग़दर से अपने संबंध की घोषणा की। ये लोग जानते थे कि **ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत का आर्थिक शोषण कर रहा है, इसके लिए भारत के सभी सम्प्रदायों के लोगों को सेना के साथ मिलकर अंग्रेजों से लड़ना चाहिए।**''[2]

2. ''ग़दर पार्टी के अनेक नेता जन-आन्दोलन का महत्व समझते थे, क्रान्तिकारी दल के अधिकांश युवक क्रान्ति की सफलता के लिए जनता को, विशेषकर किसानों और मज़दूरों को संगठित करना ज़रूरी समझते थे। क्रान्ति चाहे राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए की जाय चाहे समाजवाद के लिए, उसमें विभिन्न वर्गों की भूमिका पहचानना उसके अनुसार नीति निर्धारित करना समाज के वैज्ञानिक विवेचन से ही संभव है। मार्क्स ने समाज के विवेचन की जो पद्धति प्रतिपादित की, वह ऐतिहासिक भौतिकवाद अथवा मार्क्सवाद के नाम से विख्यात है। ग़दर पार्टी के अनेक नेता क्रान्तिकारी दल के अनेक युवक जितना ही क्रान्ति की सफलता के लिए जनसंगठनों और जनान्दोलनों को आवश्यक समझने लगे, उतना ही वे मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हुए।''[3]

इन्हीं नेताओं में से एक थे–सरदार पृथ्वी सिंह जिन्हें हम लोग बाबा पृथ्वी सिंह आज़ाद के नाम से भी जानते हैं।

रामविलास जी का यह ग्रंथ 'भारत में अंग्रेज़ी राज और मार्क्सवाद' 1982 में आया था। इसके ठीक 10 वर्ष बाद डॉ. शर्मा ने, 'इतिहास और समकालीन परिदृश्य' शृंखला प्रस्तुत की जिसे 'हिंदी माध्यम का कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय' से प्रकाशित किया। इस शृंखला में पहली कड़ी थी 'स्वाधीनता संग्राम बदलते परिप्रेक्ष्य'[4]–'1857 के स्वाधीनता संग्राम से लेकर हाल के राष्ट्रीय एकता के लिए संघर्ष तक'। इस पुस्तक में शर्मा जी ने अपनी नवजागरण की सैद्धांतिकी को विस्तार दिया था। इससे पूर्व हम उनकी नवजागरण की धारणा को भक्तिकाल से होते हुए वेदों तक जाते हुए देख चुके हैं। यह 1857 से कई हज़ार वर्ष पूर्व की ओर वापसी थी। लेकिन 1857 के बाद आधुनिक भारत में 'हिंदी साहित्य' के बाहर भारत के क्रांतिकारियों, आंदोलनों, पार्टियों और नायकों की ओर बढ़ते हुए उन्होंने उपर्युक्त ग्रंथ में तीन अध्याय लिखे।[5] समान शीर्षक से–'नवजागरण की परंपराएँ और क्रान्तिकारी आंदोलन'–(i), (ii), (iii)। उपशीर्षकों से अन्तर्वस्तु का विभाजन करते हुए। पहले अध्याय को उन्होंने 'संन्यासियों का योगदान' पर केन्द्रित किया। दूसरा अध्याय, 'क्रान्तिकारियों का योगदान' पर। और तीसरा अध्याय–'राजस्थान की साम्राज्य विरोधी काव्य-परंपरा' पर। ज़ाहिर है, हमारा ध्यान दूसरे अध्याय पर जाता है, क्योंकि वह क्रांतिकारियों के योगदान पर केंद्रित है। अत: कहा जा सकता है कि जो काम 1982 में नहीं हो पाया था, वह 1992 में हुआ। तब शर्मा जी का ध्यान इस बात पर था–''पूंजीवाद, अंग्रेज़ी राज, भारत का सामाजिक विकास, साम्राज्यविरोधी आंदोलन, मार्क्सवाद, ये सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।''[6] सावरकर